राबर्ट ब्रूस फूट

डॉ0 संगीता शुक्ला,

एसोसिएट प्रोफेसर,
प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग, नवयुग कन्या महाविद्यालय,
लखनऊ विश्वविद्यालय से संबद्ध, लखनऊ

राबर्ट ब्रूस फूट एक विख्यात भूवैज्ञानिक, पुरातत्वविद् नृविज्ञानविद, जीवाश्म वैज्ञानिक तथा संग्रहालयविद् रहे हैं। उन्नीसवीं शती में फूट द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट, संक्षिप्त लेख, शोध परक व्याख्यान और प्राचीन अवशेषों का सूचीबद्ध विवरण (कैटलॉग) उनकी सहज वैज्ञानिक सटीकता (Accuracy) को प्रदर्शित करते हैं। उनकी सहज अन्तदृष्टि भूमि के अतीत और वर्तमान (जिसमें वह रहते थे) से बखूबी समन्वित थी।

राबर्ट ब्रूस फूट के पिता डॉ0 विलियम हेनरी फूट लन्दन के विख्यात चिकित्सक थे और माता का नाम सोफिया वेल्स था। राबर्ट ब्रूस फूट का जन्म 22 सितम्बर 1834 को इग्लैंड के शैल्टनहैम नामक स्थान पर हुआ था। ब्रूस के जन्म के समय यह स्थान एक विख्यात स्पा टाउन एवं पर्यटन स्थल था।

भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण कार्यालय में 28 सितम्बर 1858 में एक भूवैज्ञानिक के रूप में फूट की नियुक्ति हुई। उनकी नियुक्ति से एक वर्ष पूर्व मद्रास प्रेसिडेंसी में सर्वेक्षण कार्य के लिये चार वैज्ञानिक नियुक्त किये गये थे। ऐसा समझा जा रहा था कि त्रिशलापल्ली और दक्षिण आरकोट मे एक विशिष्ट प्रकार की चट्टानें (क्रेटेरियस चट्टाने) उपलब्ध है और इन चट्टानों के अध्ययन से तलछटी चट्टानों (Sedimentary rocks) की स्थिति, प्राचीनता और पुरापाषाण कालीन अध्ययन सम्भव है।

यह ब्रिटिश सरकार द्वारा भारतीय भूगर्भ में छिपी खनिज सम्पदा को चिन्हित कर दोहन करने के लिये किए जाने वाले प्रयासों में से एक था। इस सर्वेक्षण कार्य के द्वौरान चार में से एक भूवैज्ञानिक एच.जियोघेगन की लू लगने से मृत्यु हो गई। तब फूट को उनका प्रतिस्थापक के रूप में नियुक्त किया गया। लगभग चौबीस वर्षीय युवा फूट भारत के इस क्षेत्र के प्राकृतिक सौंदर्य से अत्यधिक प्रभावित हुये और उन्होंने कई प्राकृतिक दृश्यों की चित्रकारी की। जिनमें से कुछ केप का दृश्य, केप कोमोरिन का दृश्य, कुमला कुमारी पगोडा और एक बिन्दु से द्वीप के प्राकृतिक चित्रण महत्वपूर्ण है। यह शान्त समुद्री दृश्य का मनोहारी चित्रण वस्तुतः उनके जैसे भू वैज्ञानिक द्वारा अपने कार्य के दौरान झेले जाने वाली कठिनाईयों के ठीक विपरीत था, जिसका विवरण उन्होंने सर्वेक्षणों के बारे में विस्तार से आख्या प्रस्तुत करते समय किया।

राबर्ट ब्रूस की प्रथम पत्नी का नाम एलिजाबेथ ऐन पर्सिवल था। एलिजाबेथ ऐन के पिता रेव पीटर पर्सीवल (पर्काईवल) प्रसिद्ध शिक्षाविद, वास्तुकार और पादरी थे। कालान्तर में वे मद्रास विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार बने और प्रेसिडेन्सी कॉलेज में वर्नाक्यूलर लिटरेचर के प्राध्यापक बने। वे तमिल भाषा के भी जानकार थे। उन्होंने बाइबिल का तमिल भाषा में प्रथम अनुवाद किया पल्लवरम चेन्नई के दक्षिण भाग में स्थित है। जबकि अतिरमपक्कम नुल्लाह चेन्नई से चालीस मील उत्तर पश्चिम की ओर स्थित है। 1866 में फूट को पल्लवरम और अतिरमपक्कम के आस पास औजार प्राप्त हुए। जिसका उल्लेख उन्होंने 1866 में सर्वप्रथम प्रकाशित किया। इसके

पश्चात पाषाण के औजारों के विवरण प्रस्तुत करते हुए कई शोध पत्र प्रस्तुत किये। उन्होंने इस विवशता का भी उल्लेख किया कि इन पाषाण औजारों का विवरण वह एक भूवैज्ञानिक की दृष्टि से ही दे पा रहे हैं। वर्ष 1863 राबर्ट ब्रूस के जीवन में बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। 30 मई 1863 को पल्लवरम में पैल्यूलिथिक उपकरण खोजे। उसी वर्ष 28 सितम्बर 1863 में फूट और उनके सहकर्मी मित्र विलियम किंग ने अतिरमपक्कम में भी पाषाण उपकरण ढूंढ लिये।

1864 में पुनः पल्रवरम में उन्हें दो और पुरापाषाण उपकरण प्राप्त हुए। उन्हें ओपदार नव पाषाण उपकरण भी प्राप्त हुए और इस प्रकार ब्रूस फूट प्रागैतिहासिक कलाकृतियों का संग्रहकर्ता के रूप में प्रतिष्ठित हुए। 1884 में राबर्ट ब्रूस फूट ने 3.5 किलोमीटर लम्बी बेलम गुफ़ाएं ढूंढीं, जो भारतीय उप–महाद्वीप में द्वितीय सबसे बड़ी गुफ़ा है। बेलम गुफाएं आंध्र प्रदेश राज्य के कर्नूल जिले की कोलीमिगून्ड़ला तहसील के गांव बेलम के समीप स्थित हैं, इन गुफाओं में से 4500 वर्ष पुराने बर्तन प्राप्त हुए थे। दो हजार वर्ष पूर्व इन्हीं गुफाओं में बौद्ध व जैन भिक्षु निवास किया करते थे। यद्यपि फूट की खोज के पश्चात भी यह गुॅफाऐं काफी समय तक उपेक्षित पड़ी रहीं। ऐर्रमलाई क्षेत्र में प्राप्त चूना पत्थर के जमाव वाले क्षेत्र में वस्तुतः कई गुफाऐं मिलती है। जिसमें से एक बेलम गुफा है और एक अन्य बिल्ला सुरगम गुफा है। राबर्ट ब्रूस फूट ने बाद में आंध्र प्रदेश के बिल्ला सुरगम क्षेत्र में विख्यात गुफाओं का सर्वेक्षण जारी रखा। उनकी इन खोजों ने भारतीय पुरातत्व का स्वरूप ही बदल दिया। और पश्चिमी जगत में मानव की पुरातनता पर चल रही बहस में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। ब्रूस फूट के एक पुत्र का नाम हेनरी ब्रूस फूट था। जिसने बिल्ला सुरगम गुफाओं के सर्वेक्षण के समय उन्हें पर्याप्त सहयोग दिया। मद्रास के गर्वनर ने बिंल्ला सुरगम की खोज में अत्यधिक रूचि ली और जब 1884 में राबर्ट ब्रूस फूट को इस कार्य से हटा कर किसी अन्य कार्य में नियुक्त कर दिया गया तब उनके प्रस्ताव पर राबर्ट ब्रूस के पुत्र हेनरी ब्रूस फूट को अस्थाई रूप से भूतत्व सर्वेक्षण विभाग में शामिल कर लिया गया। हेनरी अपने पिता के साथ बिल्ला सुरगम सर्वेक्षण एवं उत्खनन के कार्य में पर्याप्त अनुभव प्राप्त कर चुका था। अतः उनकी अनुपस्थिति में भी उसने पर्गेटरी गुफा और कैथेड्रल गुफा का उत्खनन का कार्य किया। राबर्ट ब्रूस फूट उत्खनन से उपलब्ध पुरा सामग्रियों के उपयुक्त दस्तावेज बनाने में अत्यधिक बल देते थे। उन्ही की तरह हेनरी ब्रूस फूट ने भी सुरक्षित और क्रमबद्ध रूप से कार्य किया। भूवैज्ञानिक राबर्ट ब्रूस फूट के योगदान को समादर करते हुए भू तत्व सर्वेक्षण विभाग के अधिकारियों ने 27 सितम्बर 1906 को उन्हें एक भू वैज्ञानिक उपकरण – हथौड़ा प्रतीक चिन्ह् के रूप में भेंट किया। जिस पर एक लेख लिखा है जिसके अनुसार वह अपने समय के प्रतिष्ठित और सर्वाधिक वरिष्ठ भू वैज्ञानिक घोषित किये गये थे। इसी आधार पर उन्हे भारतीय पुरातत्व के जनक इस समादित उपाधि से भी संबोधित किया जाता है। जबकि अनेक विद्वान उन्हें न केवल भारत वरन विश्व में पुरातत्व का जनक पुकारने के पक्षधर हैं।

राबर्ट ब्रूस फूट के एक मित्र एवं सहकर्मी का नाम विलियम किंग था जिनके साथ तमिलनाडु के कोरटलियार एवं आरानी बेसिन मे मानवीय व्यवहार और दोनों सांस्कृतिक स्थलों में समानता और भिन्नता के सिद्धान्तों पर वाद विवाद होता रहता था। ब्रूस न केवल एक सर्वेक्षक पुरानिधियों के संग्राहक और विद्वान समन्वयक थे बल्कि उन्हें इस बात के लिये भी याद किया जाना चाहिए कि वे इस कार्य पर भी शोध करते थे कि पुरातत्व में समस्याऐं कहाँ है और उनसे किस प्रकार निपटाया जा सकता है विदेशों एवं भारत में विभिन्न विद्वानों ने पुरातत्व के इतिहास में संस्कृति स्थल के निर्माण की अवधारणा पर कार्य किया है। भारत में नर्मदा नदी की घाटी में

पुरैतिहासिक प्रारम्भिक संस्कृति स्थलों की पहचान पर सुव्यवस्थित कार्य सर्वप्रथम टी.डी. मैक्काउन ने 1960 में प्रारंभ किया। इसके बाद कई विद्वानों ने इस विषय पर कार्य किया। फूट के लेखों से पता चलता है कि यूरोप विशेषकर बूशर दा पर्थ द्वारा किये जाने वाली सोम घाटी में किये जाने वाली खोजों और चार्ल्स डार्विन एवं चार्ल्स लाइल के शोध कार्यों के बारे में उन्हें समुचित जानकारी थी। सम्भवतः इसीलिए भारत के भू–सर्वेक्षण विभाग में नियुक्ति के पश्चात 1863 में मद्रास के निकट पल्लवरम् पुरापाषाणिक उपकरणों को ढूढ़ने में सफलता प्राप्त की। इतना ही नही शीघ्र उन्होंने पुरापाषाणिक स्थलों के निर्माण क्रम से संबंधित विचारों को भी व्यक्त करना प्रारंभ कर दिया। इन विचारों पर सहकर्मी विलियम किंग के साथ परिचर्चा का उत्तम उदाहरण 1916 में ब्रूस की मृत्यु के पश्चात प्रकाशित पुस्तक में प्राप्त होता है। इस पुस्तक का नाम है 'द फूट कलेक्शन ऑफ प्री हिस्टोरिक एण्ड प्रोटो हिस्टोरिक एंटीक्विटीसः नोटस ऑन देयर ऐजेस एण्ड डिस्ट्रीब्यूशन'। इस परिचर्चा का प्रारम्भ सितम्बर 1863 में अतरमपक्कम नुल्लाह में पाषाण उपकरण की प्राप्ति से प्रारंभ हुआ। इस स्थल पर काफी बड़ी संख्या में पाषाण के उपकरण प्राप्त हुए हैं। जिसके कारण ब्रूस को इस खोज के दो पक्षों पर गहराई से सोचने को विवश किया। यह उपकरण सतह के 3 से 10 फिट नीचे के स्तरो से प्राप्त हुए और उनके आस पास की बजरी उन उपकरणों से घनिष्ठता से जुड़ी हुई है। इस विशिष्टता के कारण पर फूट ने गहराई से चर्चा की। उन्होंने यह भी ध्यान दिलाया कि इसी प्रकार के उपकरण यूरोप मे भी मिल चुके थे। भू विज्ञान में गहन जानकारी के कारण फूट ने इस बिन्दु पर दो प्रकार से प्रकाश डाला। सर्वप्रथम उन्होंने उस स्थान के भू विन्यास की महत्ता पर चर्चा की।

राबर्ट ब्रूस फूट 1867 में लन्दन स्थित ज्योलोजिकल सोसायटी के फैलो बने थे तथा वह रॉयल ऐन्थ्रोपौलोजिकल इन्स्टीट्यूट के भी फैलो रहे थे। उन्होंने 40 वर्षों तक पश्चिम एवं दक्षिण भारत के विभिन्न भागों में प्राचीन ऐतिहासिक स्थान व वस्तुओं ढूंढने हेतु अनुसंधान किए। उनके पौत्र मेजर जनरल हेनरी बाओरेमैन फुट थे, जिन्हें द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान वीरता दिखाने के लिए विक्टोरिया क्रास से सम्मानित किया गया था।

भारतीय भू–वैज्ञानिक सर्वेक्षण में कार्य करते समय मद्रास प्रैसीडैंसी, हैदराबाद एवं मुम्बई में कई अनुसंधान किये। 1887 में वह भारतीय भू–वैज्ञानिक सर्वेक्षण के निदेशक बन गये थे। 1891 में वह सेना–निवृत्त हो गए थे उसके पश्चात कुछ समय वह बड़ौदा रियासत में रहे फिर वह तमिलनाडु के येरकौड नामक स्थान पर चले गये थे जहां उनके ससुर पादरी पीटर–पर्काईवल कार्यरत थे।

अपनी पुस्तक 'द फूट कलेक्शन ऑफ प्री हिस्टोरिक एण्ड प्रोटो हिस्टोरिक एंटीक्विटीसः नोटस ऑन देयर ऐजेस एण्ड डिस्ट्रीब्यूशन' (The Foote Collection of Indian Prehistoric and Protohistoric Antiquities. Notes on their Ages and Distribution) में राबर्ट लिखते है मेरे संग्रह में सुरक्षित पाषाण कलाकृतियां अधिकांशता मद्रास प्रेसिंडेन्सी और उसके निकट स्थित हैदराबाद और मैसूर के क्षेत्रों से प्राप्त हुयी थी इसलिए जब मेरा संग्रह इतना बढ़ गया कि उसे अपने व्यक्तिगत घर में रखना दुष्कर हो गया तो मैंने मद्रास संग्रहालय में संग्रहीत करने के लिए उसे मद्रास सरकार को समर्पित कर दिया। संग्रहालय ने ब्रूस फूट का समस्त संकलन 1904 में क्रय कर लिया और उसके लिए एक अलग कक्ष की व्यवस्था की। 1904 से 1908 के मध्य अपने संकलन को प्रकाशित करने के लिए फूटे ने इनको क्रमवार व्यवस्थित किया किन्तु उनकी निरंतर कम होती दृष्टि व अस्वस्थता के कारण यह कार्य बाधित हुआ। 29 दिसम्बर 1912 में उनकी मृत्यु के समय

तक यद्यपि यह सूची बद्ध हो चुका था किन्तु मद्रास संग्रहालय ने प्रकाशन को अन्तिम रूप देते समय पाया कि कुछ ऐसी वस्तुऐं थी जिनका उल्लेख ब्रूस फूट ने किया था किन्तु वह संग्रह में उपलब्ध नही थीं। इसके अतिरिक्त कुछ ऐसी कलाकृतियां मिलीं, जिन पर संख्या तो पड़ी हुयी थी किन्तु सूची में उनका नाम नही था। कलाकृतियों का संग्रह इतना बड़ा था कि उनका प्रकाशन दो जिल्दों में किया गया है प्रथम जिल्द में प्राप्ति स्थान और उसके जिलों के अनुसार कलाकृतियो का क्रमबद्ध विवरण दिया गया हैं और दूसरी जिल्द में कला कृतियों के समय और उनके वर्गीकरण के उपर ब्रूस फूट के लेख भी दिये गये है। मानचित्र और कलाकृतियों के चित्र. भी प्रकाशित है। इसके अतिरिक्त मृत्यु से पूर्व मिस्टर फूट द्वारा लिखा गया संक्षिप्त परिशिष्ट भी प्रकाशित किया गया है। जिससे पता चलता है कि उन्होंने लगभग 459 पुरास्थलों का सर्वेक्षण किया। इससे उन्होंने जो कलाकृतियां संग्रह में रखीं, उनमें पुरापाषाण काल से संबंधित 42 नवपाषाण काल से संबंधित 252 तथा लौह युग से संबंधित 17 तथा 5 ऐसी कलाकृतियां थीं, जिनके समय के बारे में तब तक निर्धारण नही हो पाया था। फूट की अवधारणा है कि प्रागैतिहासिक उपकरणों एवं कलाकृतियों का अध्ययन सभ्यता के विभिन्न चरणों में मानव के विकास का अध्ययन करने के लिये किया जा सकता है। भारत में मानव सभ्यता के चार चरण दिखाई पडते है प्रथम – पुरापाषाण काल (RUDE Stone age), दूसरा नवपाषाण काल (Polished Stone age), तीसरा प्रारम्भिक लौह काल व चौथा–उत्तर लौह काल में कई अन्य धातुऐं जैसे ताबा, टीन या कांसा की मिश्रित धातुओं से भी निर्मित उपकरण बनाये जा रहे थे। फूट का मानना था कि उत्खनन कार्य मे जल्दबाजी नहीं की जानी चाहिए। यह कार्य अत्यधिक सावधानी से किया जाना चाहिए। किसी स्थल पर यदि अधिक संख्या में बहुसंख्यक टूटे हुए बर्तन प्राप्त होते हैं, तो उनका निरीक्षण सावधानी पूर्वक किया जाना चाहिए। यह अक्सर देखा गया है कि नवपाषाण और लौह युग के कुम्हारों ने मिट्टी के बर्तनों को बनाते समय बहुत अधिक ध्यान आलंकारिक अभिप्राय तथा बर्तनों के रंग संयोजन पर दिया था। बर्तनों के खंडित होने पर भी कुम्हारों की निपुणता का संज्ञान प्राप्त हो जाता है। अपने चालीस वर्षीय कार्यकाल मे मद्रास तथा बाम्बे प्रेसीडेन्सी तथा राजाओं द्वारा शासित मैसूर तथा बड़ौदा राज्यों के विभिन्न क्षेत्रों का राबर्ट ब्रूस फूट ने सर्वेक्षण किया। 78 वर्ष की आयु में 29 दिसम्बर 1912 में उनका निधन हुआ।

ब्रूस फूट ने 400 से अधिक प्रागैतिहासिक स्थलों से कलाकृतियों, Ceremics तथा Antiqustian अवशेषों का संकलन तथा सूची बद्ध विवरण तैयार किया। जिसको मद्रास संग्राहलय ने संग्रहीत किया। ब्रूस फूट अपने शोध कार्यों को भारत तथा ब्रिटेन के शोधपत्रों में प्रकाशित कराते रहते थे। अपने शोध कर्ता समूह के सदस्यों में अपनी उपलब्धियों की चर्चा करने के लिये उन्होंने यूरोप में कई अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में प्रतिभागिता की। ब्रूस फूट की मृत्यु के पश्चात उनके संकलन को दो पुस्तकों में राजकीय संग्रहालय मद्रास ने प्रकाशित कराया। पहला कैटलॉग है Catalogue Raisonne and the Foote Collection of Indian Prehistoric and Protohistoric Antiquities –Catalogue Raisonne (1914) तथा दूसरे कैटलॉग का नाम है : The Foote Collection of Indian Prehistoric and Protohistoric Antiquities –Notes on their ages and Distribution (1916)

एक शती पहले किये गये राबर्ट ब्रूस फूट के कार्य लगभग उपेक्षित से रहे। ए.पी.खत्री ने अपने भारत में प्रागैतिहास के शताब्दी पूर्व के शोध नामक कृति में राबर्ट ब्रूस फूट के कार्यों का महत्व पर उचित प्रकाश डाला (1962:169–171)

कलकत्ता विश्वविद्यालय के मानवशास्त्र विभाग के डी.सेन तथा ए.के.घोष ने 1966 में स्टडीज इन प्रीहिस्ट्री इन मैमोरी ऑफ फूट (Studies in Prehistory in Memory of Foote) शीर्षक से 16 आलेख से युक्त एक जर्नल निकाला। विश्व के प्रतिष्ठित प्रागैतिहासकारों ने उसमें लेख लिखे थे। उन लेखकों में एच.डी. सांकलिया भी शामिल थे। इसी वर्ष इस विभाग ने ब्रूस फूट की स्मृति में प्रागैतिहास में सुप्रतिष्ठित अध्येता को एक स्मृति फलक भी दिये जाने की घोषणा की। 1966 में इस पुरस्कार को सर्वप्रथम प्रोफेसर एच.डी.सांकलिया को प्रदान किया गया।

राबर्ट ब्रूस फूट ने प्रामाणिक दस्तावेज के द्वारा भारत में पुरापाषाण संस्कृतियों की उपस्थिति को सिद्ध किया। जिसके बाद भारत के दक्षिण और पश्चिम के विभिन्न भागों मे प्रागैतिहासिक और पूर्व ऐतिहासिक स्थलों को पहचाना गया। वे दक्षिणी भारत में प्राचीन मनुष्य के अवशेषों के सर्वाधिक उत्साही अन्वेषक तथा प्रागैतिहासिक पुरातत्व के सर्वाधिक अग्रणी वैज्ञानिक के रूप में जाने जाते है। मानव पूरातनता के प्रश्न पर फूट ने भारत में उस समय महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिस समय पश्चिमी देशों में भूवैज्ञानिक एवं प्रागैतिहासिक पुरातात्विक प्रक्रियाओं में लोगों की विशेष रूचि इस आशय से अधिक थी कि वह अपनी संस्कृति को प्राचीनतम सिद्ध कर सके।

राबर्ट ब्रूस फूट एक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैज्ञानिक थे। अपने समकालीन कई विद्वानों के साथ हुए उनके पत्राचारों से यह पता चलता है कि वह अपनी खोजों पर विद्वानों से विमर्श करते थे। इतना ही नही उनकी अपनी खोजों के सन्दर्भ में उनके विचार, शोध कलाकृतियों की खरीद के लिये या अपने संग्रहालय के लिये उनके संग्रह की मांग कई बार विदेशी विद्वानों ने की थी। इस संदर्भ में यह उल्लेखनीय है कि ब्रूस फूट ने समस्त भारतीय कलाकृतियाँ मद्रास संग्रहालय को दे दी थीं। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि भारतीय वैदिक ऋषियों की भांति ब्रूस फूट की बौद्धिक दृष्टि सार्वभौमिक थी। यह वह समय था जबकि यूरोप के देशों में अधिसत्ता प्राप्ति तथा धार्मिक वर्चस्व स्थापित करने के लिये संघर्ष हो रहे थे। ऐसा प्रतीत होता है कि फूट की वैज्ञानिक बुद्धि ने कलाकार फैडरिक सारयू द्वारा प्रचारित विचारधारा को बखूबी समझा था और उसी आंदोलन को जारी रखते हुए विशुद्ध बौद्धिक सम्पदा परिक्षण करने का वैज्ञानिक दायित्व निभाया तथा एक समरस समाज के निर्माण में सकारात्मक योगदान देने का एक सराहनीय उदाहरण प्रस्तुत किया।

ब्रूस फूट के योगदान की महत्ता अमरावती स्तूप की दुर्दशा को जानकर समझा जा सकता है। अंग्रेजी शासन द्वारा इसकी उपेक्षा एवं स्थानीय नागरिकों में अपनी इस धरोहर के संरक्षण की चेतना एवं सामर्थ्य के अभाव के कारण अमरावती स्तूप की कलात्मक विरासत की हानि हुई।

ब्रूस फूट भारत में पुरापाषाण अवशेषों को खोजकर भू सर्वेक्षण विभाग की आख्याओं में उन्हें दर्ज करके ही नहीं सन्तुष्ट रहे। उन्होंने देश विदेश की कई शोधपरक संस्थाओं के समक्ष तत्संबंधी आलेख प्रकाशित करके इस उपलब्धि को सुप्रचारित भी किया। जिससे भारत की दासता की उस त्रासदीपूर्ण अवस्था में भी विदेशियों में, विशेषकर यूरोपियन समाज में भारतीयों की प्रतिष्ठा सुस्थापित हुई। उनके एक आलेख पर जोसेफ रेस्टविच ने टिप्पणी करते हुए कहा कि यूरोप से भी ऐसे उपकरण मिले हैं जिससे अनुमान होता है कि दोनों के निर्माता एक ही कला सम्प्रदाय से प्रशिक्षित थे।

ब्रूस फूट ने भारतीय पाषाण कालीन कलाकृतियों को विश्व के समक्ष सुप्रचारित करने के लिये वियना में एक अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी का आयोजन भी किया।

एक तरफ जब मैक्स मूलर एवं मैकाले देशज शिक्षण पद्धति का दमन कर भारतीय मेधा को गर्त में दबाने का कुचक्र रचते हुए मिशनरी विद्यालयों को बढ़ावा देकर यह प्रचार कर रहे थे कि आर्य विदेशी थे और उन्होंने भारत के मूल निवासियों का दमन करके इन क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया था। विल्किन्स ने अपनी पुस्तक डेली लाइफ एण्ड वर्क इन इण्डिया में लिखा है कि यदि वेदों को अपौरूषेय माने जाने की भारतीयों की धारणा को विनष्ट करने में सफलता मिल जाये तो ईसाई मिशनरियों का कार्य सहज हो जायेगा। मैकाले तथा मैक्समूलर के इस विद्रूप योजना का विस्तृत विकरण शब्दार्थ– प्रकाश तथा बायोग्राफीज ऑफ वडर्स में प्राप्त होता है। उन्नीस सौ पैंतीस को द इण्डियन कौंसिल ने उपलब्ध सार्वजनिक धन को केवल अंग्रेजी शिक्षा पर व्यय करने का आदेश दिया। साथ ही उच्च पदों पर भारतीयों की नियुक्ति के लिये अंग्रेजी शिक्षा को अनिवार्य कर दिया गया था।

वस्तुतः राबर्ट ब्रूस फूट फ्रांसीसी कलाकार फेड्रिक सारयू तथा फ्रांसीसी दार्शनिक अर्न्स्त रेनन (1823–92) का समकालीन था। यूरोप में विकसित हो रही राष्ट्र चेतना तथा जनतांत्रिक तथा सामाजिक गणतंत्रों की संकल्पना प्रबल किये जाने का प्रयास प्रबुद्ध वर्ग द्वारा किया जा रहा था। फेडरिक सारयू द्वारा चित्रित कल्पना दर्श (Eutopia) को उसके द्वारा 1848 में निर्मित चार चिजों की श्रृंखला से समझा जा सकता है। राजनैतिक स्वार्थ और उससे सम्बन्धित उधेड़बुन को सम्पूर्ण स्वीकार करते जाना असंयत दृष्टिकोण का परिचायक होता है। इस प्रकार ब्रूस फूट ने विश्व मानवता तथा सद्भावना की वैज्ञानिक दृष्टि का उत्तम उदाहरण प्रस्तुत किया है। दुर्दान्त आतंकवाद, पृथकतावाद, जाति, वर्ग, धर्म के आधार पर समूहबद्ध होकर लोगों की कबीलाई मानसिकता की द्विगुणित होती प्रवृत्ति से उपजी चुनौतियों को झेलते हुए वर्तमान समाज में राबर्ट ब्रूस फूट की यह देन अविस्मरणीय है। भारत को उनके बहुविध योगदान के कारण राबर्ट ब्रूस फूट को भारतीय पुरातत्व का पिता कहा जाना उचित ही है।

संदर्भ ग्रंथ

1. K. Paddayya, Essays in history of archaeology, Angkor Publisher P.Ltd., Noida, First Edition 2013, Pg. 213-229
2. K. Paddayya sushama G. Deo, Recent advances in acheulian culture studies in India, Publisher *Indian society for prehistoric and quaternary studies*, Editiion 2014
3. Pappu Shanti, Edition 2008 Indian Society for Prehistoric and Quaternany Studies Vol – XXXIII (1) : Prehistoric antiquities and personal lives: The Untold story of Robert Bruce Foote, Pg 30-50,
4. मैन एण्ड इन्वायरन्मेन्ट पत्रिका के अंक 33 में शर्मा हैरिटेज सेन्टर की निदेशक डॉ. शान्ति पप्पू ने एक लेख प्रकाशित किया है जिससे उनके पारिवारिक जीवन के बारे में विदित होता है।
5. Chakrabarti, Dilip K, 1979, Robert Bruce Foote and Indian Prehistory. *East and West.*
6. Pathak, Vishwambhar Sharan, Ancient historians of india : a study in historical biographies, Publisher : Asia publisher house, Bombay, E-Book
7. R.Ramesh and T. Chamundeswari, Recent Archaeological Explorations in Shevaroy Hills, Tamil Nadu, Editors Sulochana Radhakrishnan and Saroj Gulati, *History today*, The Indian History

and Culture Society, New Delhi , No. 14, 2013, Pg 136-137

8. Mullar F.Max, The Science of Thought Longmans, 1987
9. Mullar F. Max, Biographies of words,
10. F.Max muller, K.M, 1883, India: What can it teach us?, Funk& Wagnalls, New York. ; The Science of Thought, Longmans 1987; Bioghraphies of words
11. Wilkins, W.J., Daily life and work in india, Pg-4